



एप्पल बेर की उन्नत खेती से आत्मनिर्भरता

द्वारका¹ और निशा चढ़ार²

मध्य प्रदेश के दमोह जिले के ग्राम पिपरिया किरण (भैंसा), तहसील हटा की प्रगतिशील महिला कृषक श्रीमती अनुपमा पटेल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह के तकनीकी मार्गदर्शन में एप्पल बेर की उन्नत किस्मों एप्पल बेर ग्रीन, कश्मीरी एवं एप्पल बेर येलो की वैज्ञानिक खेती अपनाकर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। नवीन कृषि तकनीकों एवं उच्च उत्पादकता वाली फसलों को अपनाने की इनकी सोच ने इन्हें क्षेत्र की अग्रणी महिला कृषकों में स्थापित किया है। एक एकड़ क्षेत्र में एप्पल बेर बागवानी की स्थापना पर प्रथम वर्ष में लगभग 50 हजार रुपये की लागत आई, जबकि शुरुआती दो वर्षों में 75 हजार से 90 हजार रुपये तक की आय प्राप्त हुई। वर्तमान में बाग के स्थिर होने के बाद वार्षिक लागत घटकर लगभग 20 से 30 हजार रुपये रह गई है तथा आय बढ़कर 1.50 से 1.65 लाख रुपये प्रति एकड़ प्रतिवर्ष तक पहुँच गई है। चालू वर्ष में इनके बाग से लगभग 42 क्विंटल उत्पादन दर्ज किया गया। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जहाँ पारंपरिक खेती अक्सर सीमित आय का माध्यम मानी जाती है, वहीं दमोह जिले की प्रगतिशील महिला कृषक श्रीमती अनुपमा पटेल ने एप्पल बेर की उन्नत खेती अपनाकर आत्मनिर्भरता और सफलता की नई मिसाल कायम की है।

एप्पल बेर स्वादिष्ट एवं पोषक फल होने के साथ जूस, कैन्डी, पाउडर एवं मुरब्बा जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए भी उपयुक्त है, जिससे ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार

एवं अतिरिक्त आय के अवसर बढ़ रहे हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जलवायु बेर उत्पादन के लिए अनुकूल होने के कारण यह फसल कम लागत में अधिक लाभ देने वाली सिद्ध हो रही है। श्रीमती अनुपमा पटेल की यह सफलता गाथा विशेष रूप से महिला कृषकों के लिए प्रेरणास्रोत है, जो दर्शाती है कि वैज्ञानिक तकनीक, फसल विविधीकरण एवं उद्यानिकी आधारित खेती अपनाकर कृषि को लाभकारी बनाया जा सकता है।

¹अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश - 488001, ²एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश - 472001

स्वास्थ्यवर्धक

एप्पल बेर एक अत्यंत पौष्टिक, स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक फल है। इसमें विटामिन-सी, खनिज तत्व एवं ऊर्जा प्रचुर मात्रा में पाई जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानी जाती है। यह शरीर की कमजोरी दूर करने, पाचन शक्ति बढ़ाने एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने में सहायक है। गर्मी के मौसम में बेर से तैयार जूस लू से बचाव में भी उपयोगी माना जाता है।

पारंपरिक खेती से अपेक्षित आय प्राप्त न होने के कारण श्रीमती अनुपमा पटेल ने आयवर्धक बागवानी फसलों की ओर ध्यान दिया। इसी दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह द्वारा आयोजित प्रशिक्षण एवं तकनीकी परामर्श कार्यक्रमों में भाग लेने पर इन्हें एप्पल बेर की उन्नत किस्मों एवं इसकी व्यावसायिक संभावनाओं की जानकारी प्राप्त हुई। इससे प्रेरित होकर उन्होंने अपने खेत में एक एकड़ क्षेत्र में एप्पल बेर की वैज्ञानिक बागवानी स्थापित करने का निर्णय लिया। इन्होंने एप्पल बेर ग्रीन, एप्पल बेर कश्मीरी एवं एप्पल बेर येलो जैसी उन्नत किस्मों का चयन कर आधुनिक तकनीकों के साथ इनकी खेती प्रारंभ की, जिससे इन्हें उल्लेखनीय उत्पादन एवं बेहतर आय प्राप्त होने लगी।

प्रारंभिक निवेश एवं स्थापना

एप्पल बेर बागवानी की स्थापना के प्रथम वर्ष में पौध सामग्री, गड्डों की तैयारी, जैविक खाद, सिंचाई व्यवस्था एवं पौध संरक्षण सहित लगभग 50 हजार रुपये प्रति



ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार की दिशा

एकड़ की लागत आई। कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में पौध रोपण दूरी, खाद एवं पोषण प्रबंधन, सिंचाई, छंटाई तथा पौध संरक्षण की वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाया गया, जिससे बाग की बेहतर वृद्धि एवं उत्पादन सुनिश्चित हुआ।

आय वृद्धि: एप्पल बेर के पौधों ने स्थापना के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष से ही फल देना प्रारंभ कर दिया, जिससे आय प्राप्त होने लगी। शुरुआती वर्षों में प्रति एकड़ लगभग 75 हजार से 90 हजार रुपये तक की आय प्राप्त हुई। वर्तमान में बाग के पूर्ण विकसित होने के बाद वार्षिक लागत घटकर लगभग 20 से 30 हजार रुपये प्रति एकड़ रह गई है, जबकि आय बढ़कर 1.50 से 1.65 लाख रुपये प्रति एकड़ प्रतिवर्ष तक पहुँच गई है। चालू वर्ष में लगभग 42 क्विंटल उत्पादन दर्ज किया गया है।

इस प्रकार, एप्पल बेर की वैज्ञानिक बागवानी से श्रीमती अनुपमा पटेल को पारंपरिक खेती की तुलना में कई गुना अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा है।

मूल्य संवर्धन: श्रीमती अनुपमा पटेल केवल ताजा फल विक्रय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि एप्पल बेर आधारित मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्माण की दिशा में भी कार्य कर रही हैं। वे बेर जूस, बेर कैण्डी, बेर पाउडर एवं बेर मुरब्बा जैसे उत्पाद तैयार कर रही हैं। इन प्रसंस्कृत उत्पादों के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार एवं महिला समूहों के लिए अतिरिक्त आय के नए अवसर विकसित हो रहे हैं।

संभावनाएँ: बुन्देलखण्ड क्षेत्र में देसी बेर की खेती पारंपरिक रूप से की जाती रही है। दमोह जिले की जलवायु एवं मिट्टी एप्पल बेर की उन्नत किस्मों के लिए अत्यंत उपयुक्त पाई गई है। कम पानी की आवश्यकता, कम देखभाल तथा अधिक सहनशीलता के कारण



भरपूर फलों से लदा वृक्ष

यह फसल सूखा प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हो रही है। श्रीमती अनुपमा पटेल की सफलता से प्रेरित होकर आसपास के अनेक किसान भी एप्पल बेर की उन्नत बागवानी की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

तकनीकी सहयोग: श्रीमती अनुपमा पटेल की सफलता में कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्हें केन्द्र द्वारा वैज्ञानिक मार्गदर्शन, उन्नत बागवानी तकनीकों तथा पौध प्रबंधन संबंधी परामर्श प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, उद्यानिकी विभाग, दमोह द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं बागवानी अनुदान संबंधी जानकारी उपलब्ध

करवाई गई, जिससे बागवानी स्थापना एवं विस्तार में सहायता मिली।



विपणन हेतु तैयार पौष्टिक बेर

ग्राम पिपरिया किरण की प्रगतिशील महिला कृषक श्रीमती अनुपमा पटेल ने एप्पल बेर की उन्नत खेती अपनाकर यह सिद्ध किया है कि सही फसल चयन, वैज्ञानिक मार्गदर्शन एवं निरंतर परिश्रम के माध्यम से सीमित संसाधनों में भी उच्च आय प्राप्त की जा सकती है। इनका एक एकड़ एप्पल बेर बागवानी मॉडल बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आयवर्धक, टिकाऊ एवं महिला अनुकूल कृषि का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा है। यह सफलता की कहानी किसानों को बागवानी आधारित फसल विविधीकरण अपनाने एवं आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा प्रदान करती है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती अनुपमा पटेल की इस पहल से क्षेत्र में महिला कृषकों के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है तथा ग्रामीण परिवारों की आय में स्थिरता आई है। एप्पल बेर बागवानी के माध्यम से पोषण सुरक्षा को बढ़ावा मिला है और क्षेत्र में उद्यानिकी आधारित खेती का विस्तार हो रहा है। साथ ही, मूल्य संवर्धन गतिविधियों के कारण स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी विकसित हुए हैं। वर्तमान में श्रीमती अनुपमा पटेल विभिन्न कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपने अनुभव साझा कर अन्य किसानों, विशेष रूप से महिला कृषकों को प्रेरित कर रही हैं। श्रीमती अनुपमा पटेल का मानना है कि यदि किसान पारंपरिक खेती के साथ फल बागवानी एवं वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाएँ, तो कम भूमि में भी अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। इनके अनुसार एप्पल बेर जैसी फसलें बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जलवायु के लिए अत्यंत उपयुक्त एवं लाभकारी हैं।